WLC15-1-4

क्या परमेश्वर का अस्तित्व है? परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस - प्रोग्राम 4

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, सबसे बड़ी रुकावट क्या है जो लोगों को परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में विश्वास करने से रोकती है? बहुत से लोग कहते हैं, ये दुष्ट और दू:खों की समस्या है, सवाल है की कैसे भला परमेश्वर जो पूरा प्रेमी और सर्वसामर्थी है, वो इस संसार में इतनी बुराई और दू:खों को आने देता है?

अनाऊंसर: आज मेरे मेहमान इस के भावनात्मक और बुद्धिमत्ता पहलू के बारे में बताएगे, फिलोसोफर डॉक्टर विलियम लेन क्रेग/ इन्हें हमारी पीढ़ी के सबसे बड़े मसीही फिलोसोफर के रूप में माना जाता है/ डॉक्टर क्रे के पास फिलोसोफी में पी एच डी है, बरमिंगहम इंग्लैंड साथ ही डॉक्टर ऑफ़ थियोलोजी डिग्री, म्युनिक की यूनिवर्सिटी से, हमारे साथ जुड़ जाए ड जॉन एन्करबर्ग शो में/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, आज मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद, हम ये सवाल देख रहे हैं/ जो कि खास सवाल है, जो बहुत से लोगों को मसीही परमेश्वर पर विश्वास करने से रोकता है, ये तो दुष्ट और दू:खों की समस्या है/ सवाल ये है की कैसे भला परमेश्वर जो प्रेमी और सर्वसामर्थी है, इस संसार में इतने दू:खो और परेशानी को आने दे सकता है/ आज मेरे मेहमान संसार के विख्यात फिलोसोफर हैं, डॉक्टर विलयम लेंक्रेग और डॉक्टर क्रेग आप इस सवाल को किस तरह जवाब देगे?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: इस सवाल से निपटे हुए जॉन मैं सोचता हूँ कि ये बहुत जरूरी है कि हम जान ले जिसे मैं दुष्ट के बारे में बुद्धिमत्ता की समस्या कहता हूँ, और दुष्ट की भावनात्मक समस्या/ दुष्ट की बुद्धिमत्ता की समस्या कहती है, हम कैसे इसका सही लेखा दे सकते हैं परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में और संसार के दू:खों के बारे में, भावनात्मक समस्या में है, कैसे लोगों की नापसंद को दूर करे जिसके कारण वो या दुसरे लोग बहुत दू:ख उठाते हैं/ और मैं सोचता हूँ कि ये फर्क बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस फिलोसोफर समस्या का जवाब ये है, ये

तो सुखा और परवाह न करनेवाला दिखता है, उस व्यक्ति के लिए जो दुष्ट भावनातमक रूप में दू:ख उठा रहा है, जब कि दूसरी और भावनात्मक समस्या झूठी दिखाई देती है,फिलोसोफी काफी नही है कि इसे दूर करे, केवल एक फिलोसोफिकल सवाल के रूप में, तो मैं विश्वसा करता हूँ कि बहुत से लोग, सच में दुष्ट के भावनात्मक समस्या से लड़ रहे हैं, ये बुद्धिमत्ता की समस्या नही है, लेकिन दोनों के बारे में बताना बहुत जरूरी हैं, क्योंकि लोग सोचते हैं कि समस्या बुद्धिमत्ता की है, और इस तरह समस्या को दूर करने के द्वारा, हम सच में जड़ की बात पर आते हैं, जो कि भावनात्मक समस्या है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बुद्धिमत्ता की समस्या से शुरू करते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बुद्धिमत्ता की समस्या फिर से दो वर्जन में आती हैं, जिसे जानना जरूरी है, लॉजिकल वर्जन और प्रोबब्लिस्टिक वर्जन में, लॉजिकल वर्जन ये बताता है कि परमेश्वर और दुष्ट का एक साथ अस्तिव में होना लोगिकाली असंभव है/ ये तो बहुत बड़ी शक्ति है और अटल रहनेवाली चीज़ है, एक रह सकता तो दूसरा नही रह सकता/ और जब कि दुष्ट और दू:ख अवश्य ही अस्तित्व में हैं, इसलिए ये माना जाता है कि परमेश्वर नही है/ इसके विरुद्ध में प्रोबब्लिस्टिक वर्जन करता है कि परमेश्वर और दूष्ट का एक साथ होना लॉजिकली संभव हो सकता है, ठीक है, हम इसे देख सकते हैं, लेकिन कुछ भी हो, ये बिलकुल सही नही है/ याने संसार में दुष्ट और दू:ख है तो परमेश्वर का अस्तित्व नही हो सकता/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, पहले के बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बुराई की समस्या के बारे में लॉजिकल समस्या सामान्य रूप में कहती है, ये दोनों संभावनाए एक दुसरे के साथ लॉजिकली नही रह सकती है/ और बड़ा प्रेमी और सर्वसामर्थ परमेश्वर अस्तित्व में है/ और बुराई भी अस्तित्व में है/ और इसलिए बड़ा प्रेमी और सर्वसामर्थी परमेश्वर अस्तित्व में नही है/ ये तो लॉजिकल वर्जन है इस बुराई की समस्या का/ इस वर्जन में समस्या ये है जॉन, कि अब तक कोई भी लॉजिकल फर्क को नही दिखा सका, इन दो बातों में, कुछ भी हो, ये एक दूसरे का इनकार नही करते हैं/ याने यदि नास्तिक इस बात का दावा करते हैं कि ये दो बातें इस दूसरे के विरुद्ध में हैं/ तो उसका अर्थ होगा ये अनिश्चित रूप में विरोधी हैं, लेकिन सटीकता से विरोधी नही है/ लेकिन इस केस में उसे कुछ छिपी हुई बातें देखनी होगी, जो ये फर्क दिखाए,और उसे प्रकट करे/ और मुश्किल ये है कोई भी नास्तिक और कोई फिलोसोफर कभी भी सफलता से नही देख पाए कि ये छिपी हुई बातें क्या हैं, जो इस फर्क को दिखाए और समझा सके/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बील आपने कहा कि हम एक कदम आगे जाकर सच में साबित कर सकते हैं, कि परमेश्वर और दुष्ट का अस्तित्व लॉजिकली संभव है, हम इसे कैसे बता सकते हैं?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, नास्तिक ये दिखाने में असफल रहे हैं कि वो अनिश्चित हैं, और हम सकारात्मक रूप में दिखा सकते हैं कि वो निश्चित हैं, हमें बस यही करना है कि तीसरा प्रेमेस जोड़ना है, जो कि परमेश्वर के बारे में निश्चित है कि परमेश्वर सर्वसामर्थी और बड़ा प्रेमी है, और ये बताए कि दुष्ट अस्तित्व में है/ और यहाँ ये प्रेमेस है/ परमेश्वर के पास नैतिक अनुमति के कारण है, कि उसने दुष्ट और दू:खों को क्यों अनुमति दी है/ जब तक कि ये प्रेमेस संभव रूप में सत्य है/ ये दिखाता है कि कोई अनिश्चितता नही है, परमेश्वर के अस्तित्व और दुष्ट और दू:खों के अस्तित्व में/ तो नास्तिक के पास बहुत बडे बोझ का सबूत है कि दिखाए कि ये नैतिक रूप में असंभव है, कि परमेश्वर के पास नैतिक पर्याप्त कारण है, कि उसने संसार में दुष्ट और दू:खों को आने दिया है/ और कोई भी नास्तिक कभी सफल रूप में, इस बात को साबित नही कर पाए, और इसलिए आज मैं अपने दर्शकों को बड़ी ख़ुशी से ये कहता हूँ, कि फिलोसोफर के बिच ये बात बड़े रूप में मानी जाती है, यहाँ तक कि नास्तिक फिलोसोफर द्वारा, कि ये दुष्ट की समस्या का लॉजिकल वर्जन हल किया गया है/ समस्या का ये वर्जन बाजू रख दिया गया है, और कोई भी लॉजिकल अनिश्चितता नही है, परमेश्वर और इस संसार के दुष्ट और दू:खों के बारे में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और लोग जानना चाहते हैं वो सारे कारण कि क्यों फिलोसोफर इस निष्कर्ष पर आए हैं, वो आपकी किताब रिजनेबल फेथ पढ़ सकते हैं, और ये सब वहां है और अद्भुत है, लेकिन चलिए इससे भी गहरी समस्या के बारे में देखते हैं/ ये बुराई की प्रोबब्लिस्टिक समस्या है/ और ये बहुत मुश्किल क्यों है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, क्योंकि निष्कर्ष बहुत मॉडेस्ट है, तो ये साबित करना आसान होता है, कि हम और भी मॉडेस्ट दावे करते रहे/ ये समस्या कहती है ठीक है, ठीक है, ये लॉजिकली संभव है, कि परमेश्वर और दुष्ट एक साथ अस्तित्व में हैं, लेकिन फिर भी ये सही नही होगा, और बताते हैं संसार के दू:खों और परेशानियों की गहराई के बारे में, तो ये सही नही होगा कि सर्वसामर्थी और बड़ा प्रेमी परमेश्वर है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, बील आपने कहा कि तीन मुख्य कारण हैं, कि ये क्यों संदेहास्पद नही है कि परमेश्वर का अस्तिव है जब कि संसार में दुष्टता और दू:ख हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, मैं सोचता हूँ कि नास्तिक अभी भी सबूत का बोझ नही उठा सकते हैं, जो ये दिखा सके कि संसार में बुराई और दू:ख परमेश्वर के अस्तित्व को सही न दिखा सके/ पहला कारण ये है, कि हम सही परिस्थित में नही हैं, कि किसी भी भरोसे के साथ ये कह सके, कि ये संभवनाए दिखाए कि परमेश्वर के पास पर्याप्त नैतिक कारण नही है इस बुराई के लिए जो हम इस संसार में देखते हैं, सीमित व्यक्ति के रूप में, हम सीमित हैं बुद्धिमत्ता में, प्रकाशन में, स्पेस और समय में, और ये हो सकता है कि परमेश्वर ने इस संसार में बुराई और दू:खों को अनुमति इसलिए दी होगी, ये हमारी सीमित बुद्धि से न समझ सके/ परमेश्वर बड़ा महान है, जो इतिहास का अंत शुरू से ही देखता है, और सारी घटनाओं को निश्चित करता है उस निश्चित अंत के लिए/ और हो सकता है कि इसका कारण ये है, कि परमेश्वर इने बुराई और दू:खों को इसलिए आने दिया है, जो हमारे सीमित समझ के अनुसार है, जो शायद इतिहास में अब से सैकड़ों साल के बाद भी प्रकट न हो, शायद और किसी देश में हो/

हर घटना जो मनुष्य के इतिहास में होती है, चाहे कितनी भी छोटी हो, उसके रिप्ल इफेक्ट होते हैं, इस इतिहास में जिसके परिणाम पहले से पूरी तरह नही दिखाई देते हैं, उन्हें जो समय और स्पेस में सीमित होते हैं/ चलिए इसका उदाहरण देखते हैं, आधुनिक साइंस में ये बात बहुत तेज़ी से बढ़ रही है, जिसे केऑस थेयरी कहते हैं, वैज्ञानिकों ने दिखाया है कि चाहे कोई घटना छोटी ही हो, जो तितली के पंखों के फडफडाने जैसे हो, जो फूल पर बैठती है अफ्रीका के जंगल में, वो सक्रिय कर सकती है ऐसी शक्ति जिसके कारण आगे जाकर एक बवंडर आएगा/ वहां अटलान्टिक समुन्दर में, और जब कि कोई भी उस तितली को नही देखता है/ क्या सिधान्तों में कभी किसी ने ऐसे प्रभाव का अनुमान लगाया है/ अब इसी तरह से, किसी मासूम की हत्या होना, या बच्चा लुकिमिया से चल बसा, ये इतिहास में रिप्ल इफेक्ट भेजता है, तो इसे होने देने के लिए परमेश्वर के नैतिक कारण शायद हमारा जीवन काल में कभी प्रकट न हो/ और हम इस तरह से निश्चित होते हैं कि किसी भी तरह से इस तरह के परिणामों की अपेक्षा भी नही करते हैं/

जब हम समझते हैं, परमेश्वर के पूरी मनुष्य जाती के इतिहास के प्रयोजन के बारे में सोचते हैं, और वो चला रहा है, स्वतंत्र इच्छा रखनेवाले मनुष्य को कि उससे निश्चित अंत प्राप्त कर सके/ मैं सोचता हूँ कि आप देख सकते हैं आशाहीनता को, कि हम इसे देखकर किसी तरह के भरोसे के साथ कह सके, कि ये सही है कि परमेश्वर के पास काफी नैतिक कारण है कि संसार में हम जिस वुराई को देखते हैं उसे अनुमति दे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब दूसरा कारण कि आप क्यों कह रहे हैं, कि ये क्यों सही नही कि परमेश्वर अस्तित्व में है और बुराई और दू:ख अस्तित्व हैं, कि हमारे पास कुछ बाइबल का सिद्धान्त है, जो दुष्ट के अस्तित्व को मानती है, ये कैसे होता है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मसीही विश्वास कुछ सिद्धान्त बताता है, जिससे बुराई की संभवना बहुत बढ़ जाती है, इस संसार में, यदि परमेश्वर का अस्तित्व है तो/ इसका यही अर्थ है, कि बुराई और दू:ख ये इतने चौकानेवाले नही हैं, मसीही आस्था के लिए/ अब इन में से कुछ सिद्धान्त क्या हैं, जी पहले ये हैं कि जीवन का उद्देश, तो मनुष्य की इस जीवन में ख़ुशी नही है, लेकिन परमेश्वर का ज्ञान है, मैं सोचता हूँ की दू:ख उठाने की समस्या का कारण यही है, ये इतनी मुश्किल है, यही है की हम स्वाभाविक रूप में अनुमान लगाते हैं कि परमेश्वर अस्तित्व में है और हमारे जीवन के लिए उसका उद्देश है, केवल ख़ुशी/ इस संसार में/ परमेश्वर की इच्छा है कि एक अच्छी आरामदेह जगह बनाए, अपने पालतू मनुष्य को बढ़ाने के लिए/ लेकिन मसीही दृष्टिकोण से ये गलत है/ हम परमेश्वर के पालतू नही हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: और जीवन का उद्देश, इस संसार में मनुष्य की ख़ुशी नही, लेकिन परमेश्वर का ज्ञान है, जो आगे पूरी तरह मनुष्य की ख़ुशी लाएगा, और पूरा करेगा, इसलिए इस जीवन में बहुतसी बुराई होती है, जो पूरी तरह से व्यवहारिक नही है की मनुष्य की खुशी को उत्पन्न करें/ लेकिन जरूरी नही कि व्यवहारिक न हो कि परमेश्वर के बारे में गहरा ज्ञान उत्पन्न करे/ हो सकता है कि संसार की बुराई और दू:खों के द्वारा, परमेश्वर सच में इसका उपयोग करता है कि लोगों को अपने बारे में गहरे ज्ञान में लेकर आए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आपने कहा दूसरा कारण, बाइबल का कारण, कि मनुष्य तो परमेश्वर से और उसके उद्देशों से बलवा करने की दशा में है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल मनुष्य जाती तो परमेश्वर के विरुद्ध में बलवा करने की दशा में है/ उसने परमेश्वर के नैतिकता के नियम तोड़े हैं, उसने खुद को अनैतिकता में और लालच में डूबो दिया है, और भयानक तो ये है कि मनुष्य दुसरे मनुष्यों से अमानवीय व्यवहार करता है, ये तो बताता है कि मनुष्य की नैतिकता का स्थर घट गया है, परमेश्वर के साथ आत्मिक रूप में दूर हो गए हैं, और बाइबल कहती है कि परमेश्वर इसे रोकने

के लिए हस्तक्षेप नही करता है, वो मनुष्य की अनैतिकता को अपनी मंजिल तक जाने देता है/ और ये तो केवल इस बात को दिखाता है, कि हमें परमेश्वर की क्षमा चाहिए/ और नैतिक शुद्धिकरण और उद्धार चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, जब मसीही लोग बाइबल में पढ़ते हैं तो संसार में बुराई को देखकर नही चौकते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल, और सच में मसीही तो इसकी अपेक्षा करेगे, हमारी परमेश्वर से दूर रहने की दशा के बारे में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आपने कहा है कि बाइबल का तीसरा सिद्धान्त है कि परमेश्वर का ज्ञान अनंत जीवन की और ले जाता है जो बहुत जरूरी है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये बहुत जरूरी है, ये जीवन केवल इतना ही नही है/ बाइबल के दृष्टिकोण से ये जीवन तो मुश्किलों से भरा और सक्रा मार्ग है, जो परमेश्वर के अनंतकाल के बड़े भोज के हॉल में लेकर जाता है/ और जिन्होंने अपना दू:ख सह लिया है, और इस जीवन में दर्द सहा है, और परमेश्वर पर भरोसा रखा है, वो इस जीवन में पीछे देखेगे, और कहेगे कि इस में से जाना तो करोड़ो करोड़ो और करोड़ो बार योग्य रहा है, कि हम इस आनंद और ख़ुशी को पा सके/ जो उनके पास स्वर्ग में होगा/

प्रेरित पौलुस बहुत दू:खों से भरा जीवन जीया, जब हम ये सोचते हैं, लेकिन फिर भी वो लिखता है, इसलिए हम हियाव नही छोड़ते क्योंकि हमारा पल भर का हल्का क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है, हम तो देखि हुई वस्तुओं को नही परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अन्देखी वस्तुएं सदा बनी रहती है/

पौलुस कल्पना में इसे नापता है इस जीवन की सडाहट और दू:खों की तुलना करता है उस अनंतकाल की महिमा से जो परमेश्वर अपनी संतानों पर स्वर्ग में उंडेलता है/ और वो कहता है कि महिमा का वजन इतना ज्यादा है, कि इस जीवन के दू:ख योग्य नही है, उसकी तुलना में, और इस बारे में सोचिए, जितना ज्यादा समय हम अनंतकाल में परमेश्वर के साथ बिताएगे, उतना ज्यादा इस जीवन का दू:ख घटते जाएगा/ तुलना में और सच में, ये तो बिलकुल छोटे पल होगे,इसलिए पौलुस इसे कहता है पल भर का हल्का सा क्लेश, वो जो भयनक रूप में दू:ख उठा रहे थे उनके बारे में अनदेखा नही कर रहा था, देखा जाए तो वो उन में से एक था, लेकिन वो समझ

गया था की अनंतकाल की ज्योति में, इस जीवन के दू:खों की तुलना उस आनंद और आशीष से नही कर सकते जो परमेश्वर स्वर्ग में अपनी संतानों को देगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बाइबल का चौथा कारण है कि परमेश्वर का ज्ञान समझ से परे भला है, इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये बात पौलुस ने भही बताई इस वचन में जो हमने अभी पढ़ा है, वो कहता है कि इस जीवन के दू:खों की तुलना नही की जा सकती है, उस आशीष से जो हम स्वर्ग में पाएगे/ परमेश्वर को जानना जो अनंत भलाई और प्रेम का स्रोत है, वो समझ से बाहर भला है/ इस जीवन के दू:खों की तुलना इससे नही की जा सकती है/ इसलिए जो व्यक्ति परमेश्वर को जानता है, चाहे वो कितना भी दू:ख उठाए, चाहे उसका दर्द कितना भयानक हो/ वो फिर भी सच में कह सकता है, परमेश्वर भला है, मेरे लिए, क्योंकि वो जानता है कि परमेश्वर बयान से बाहर भला है/

ये चार मसीही सिद्धान्त, यदि सच हैं तो ये अनिश्चितता घटते हैं, की संसार की बुराई और दू:खों के लिए परमेश्वर के अस्तित्व का इनकार करे/ तो मैं सोचता हूँ कि अंत में बात तो यही है कि संसार में बुराई और दू:ख उठाना, तो मसीही परमेश्वर के अस्तित्व को दूर नही करता है, लेकिन इसके विपरीत मैं सोचता हूँ की मसीही परमेश्वर का अस्तित्व तो ये और भी निश्चित करता है, जब हम संसार की बुराई और दू:खों को देखते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है बिल चलिए मुद्दे को बदलकर हमारी आउट लाइन पर चले कि तीसरा कारण है जो दिखता है कि परमेश्वर अस्तित्व में है और ये भी बताता है कि बुराई भी असितत्व में है, जो ज्यादा काम करती है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल, जब नास्तिक कहते हैं कि संभव नही हो सकता कि परमेश्वर अस्तित्व में है/ हमें तुरंत खुद से पूछना चाहिए, संभवता का मतलब क्या? संभावना पृष्टभूमि की जानकारी पर आधारित होता है, उदाहरण के लिए, स्वेन एक जवान स्वीडिश व्यक्ति हैं, और ये 90 संभवना है कि जवान स्वीडिश लोग स्की करते हैं, अब पृष्टभूमि से मिली इस जानकारी के कारण ज्यादा संभवना है कि स्वेन एक स्कीअर है/ लेकिन अब कहिए कि हमने और भी पृष्टभूमि की जानकारी जमा की है, की स्वेन एक डबल ऐम्प्युटी है/ और 95 प्रतिशत स्वीडिश डबल ऐम्प्युटी स्की नही करते हैं/ तो अब अचानक इस नई पृष्टभूमि की जानकरी पर ज्यादा संभावना नही है कि स्वेन एक स्कीअर है/ याने जब कोई कहता है कि ये संभवना नही है कि प्रभु का अस्तित्व हो/ हमें तुरंत ही पूछना होगा संभवना नही है ये किसके संबंध में है/ संसार की बुराई और दू:खों के सम्बन्ध में,

जी, यदि अपनी पृष्टभूमि की जानकारी से आप केवल यही देखते हैं, कोई आश्चर्य नही है कि परमेश्वर का अस्तित्व संभव नही दिखेगा इस बात से/ लेकिन ये सच दिलचस्प सवाल नही है/ देखिए, दिलचस्प सवाल ये है जो पृष्टभूमि की पूरी जानकारी पर आधारित होता है, क्या परमेश्वर का अस्तित्व संभव है? और मैं मानता हूँ जब हम जानकारी को पूरी तरह से देखते हैं, परमेश्वर के अस्तित्व के संबंध में, तो परमेश्वर का अस्तित्व तो बहुत संभव दिखता है, चाहे हम बुराई और दू:खों की बातों के कारण उसके अस्तित्व की संभवना का इनकार करे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: देखिए बहुतसी छोटी छोटी जानकारी हैं जो आपने कहा कि आपकी बात की मदत करती हैं/ हमें इस बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मेरे डीबेट और आर्टिकल्स में मैंने परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहुत से विवादों का जवाब दिया है, उदाहरण के लिए मैं सोचता हूँ कि कुछ न होने के बजाए परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है कि संसार क्यों अस्तित्व में है/ मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है संसार के शुरू के बारे में एक निश्चित भूतकाल में, मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है, संसार के फाइन ट्यूनिंग के लिए, या बुद्धिमत्ता के प्रतिउत्तर के जीवन के लिए/ मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है संसार में नैतिक मूल्यों और कामों के बारे में/ और मैं बहस करता हूँ कि परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है, यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों के लिए/ याने जब हम पृष्टभूमि की जानकारी के पुरे विवरण के बारे में देखते हैं, मैं सोचता हूँ की ये बहस ये संभव बनाती है कि परमेश्वर का अस्तित्व है/ चाहे ये भी कहने के लिए संभावना हो कि बुराई और दू:खों से परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सवाल उठाए/ जो बुराई की समस्याओं के बारे में कहते हैं, वो अनुमान लगाते हैं की तराजू में दूसरी ओर कुछ भी नही है/ लेकिन सच में मैं सोचता हूँ कि इन सबूतों को देखे, जो परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में है/ जो तराजू के दुसरे पलड़े में है/ ये बुराई और दू:खों से आनेवाली किसी भी संभावना से बहुत ज्यादा होती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आपने अपनी किताब में चकित करनेवाला वाक्य कहा है की बुराई की समस्या ही परमेश्वर के अस्तित्व को साबित करती है/ इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये इस बहस से संबंधित है जो मैंने बताया कि परमेश्वर संसार में अच्छे नैतिक मूल्यों के लिए विवरण है/ यदि परमेश्वर अस्तित्व में नही होता, तो भले और बुरे के लिए निश्चित स्थर नही होता, तो

नैतिक मूल्यों की कोई जरूरत नही होती, ये तो केवल भ्रम होता जो बना होता बायोलॉजीकल क्रान्ति और सामजिक बातों के कारण, तो हम इस तरह से बहस कर सकते हैं, प्रेमेस 1, यदि परमेश्वर का अस्तित्व नही है, तो नैतिक मूल्यों का अस्तित्व नही है, बहुत से नास्तिक इस बात को मानते हैं, नंबर 2 बुराई का अस्तित्व है/ ये नास्तिक भी मानते हैं, 3 इसलिए अच्छे नैतिक मूल्यों का अस्तित्व है/ खासकर बुरी बातें होती है, तो इससे चौथी बात आती है कि परमेश्वर का अस्तित्व है/ याने व्यवहारिक रूप में, बुराई भावनात्मक रूप में, परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सवाल उठाता है, तो गहरे फिलोसोफिकल स्थर पर, बुराई सच में परमेश्वर के अस्तित्व को साबित करती है, क्योंकि परमेश्वर न हो तो बुराई और भलाई अपने आप में अस्तित्व नही रखेगी/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बिल मैं सोचता हूँ कि लोग इस बात को जान ले कि मसीही विश्वास में बुराई की भावनात्मक संभावना के बारे में भी कहने के लिए कुछ है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, ये मानसिक विचारधारा बुराई की समस्या का बुद्धिमत्ता से जवाब देना, शायद ये उन्हें सांत्वना न दे जो सच में जा रहे हैं, भयानक, भावनात्मक दर्द से दू:खों के परिणाम में, तो सवाल उठता है कि क्या मसीही विश्वास बुराई की भावनात्मक समस्या के बारे में कुछ कहता है? मैं सोचता हूँ कि ये निश्चित देता है जॉन, क्योंकि देखिए परमेश्वर कोई दूर रहनेवाला सृष्टिकर्ता नही है, जो दूर खड़े रहता और अपने बनाए संसार के लिए ठंडे विचार रखता, नही वो तो प्रेमी दयालु पिता है, जो हमारे दू:खों को बांटता है/ और हमारे साथ दू:खी होता है, सच में यीशु मसीह के व्यक्तित्व में, और मनुष्य के इतिहास में, वो हमारे साथ मिलता है हमारे दू:ख और हमारे पापों को उठाने के द्वारा/

एल्विन प्लांटिंगा, जो आज संसार में सबसे बड़े फिलोसोफर हैं, उन्होंने इस समस्या के बार में इस तरह से लिखा, जैसे विश्वसी इन चीजों को देखते हैं, तो परमेश्वर चुपचाप आराम से अपनी सृष्टि के दू:ख उठाने को नही देखता है/ वो भीतर आता है और हमारे दू:खों को बांटता है/ वो इस दू:ख को सहता है कि अपने पुत्र को देखे, जो त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति है, वो दू:खों को सहता और क्रूस पर शर्मिंदा होकर मारा जाता है, मसीह को तैयार किया गया कि वो नर्क की पीड़ा को सहता जाए/ कि पाप पर जय पाए और मृत्यु पर और बुराई पर/ जो हमारे संसार में दू:ख लाते/ और हमे वो महिमामय जीवन दे जो कल्पना से भी बढकर है/ वो हमारे बदले में दू:ख उठाने के लिए तैयार किया गया, कि वो उन दू:खों की सहे जिससे हम नई शुरुवात पाए/

देखिए क्रूस पर, मसीह ने निर्दोष होते हुए वो दू:ख उठाया जो हम में से कोई भी सह नही सकता था/ उसने पुरे संसार के पाप के लिए दण्ड उठाया, तो जब हम बुराई की भावनात्मक समस्या के बारे में सोचते हैं, मैं सोचता हूँ कि मसीह के क्रूस पर मनन करना और वो जिसमें से जाने के लिए तैयार था मेरे लिए अपने प्रेम के कारण, वो मुझे बल देता है कि मैं उस क्रूस को सह लू जिसे उठाने के लिए उसने मुझे बुलाया है/ इस सीमित जीवन में जब तक मैं उसके पास उसकी महिमा ने न जाऊ/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: वो लोग जो सच में कुचलने वाली तंदुरुस्ती की समस्या होती है, या उनके जीवन में बुराई आती है या जिन्होंने अपने प्रियजन को खो दिया आप उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए क्या कहेगे?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं उन्हें प्रोत्साहित करूंगा कि मसीह के जख्मों पर मनन करे, कि उसके दू:खों की गहराई को सोचे, वो इनमे से आपके लिए गया कि आपको परमेश्वर के पास लाए/ और इससे आपकी मदत होती कि आपको हौसला दे, और बल देगा कि आप उन दू:खों की सह सके जो उसने उठाने के लिए बुलाया है/ जॉनी इरिक्सन टाडा का उदाहरण को देखिए/ हम लोग उनकी सराहना करते हैं, वो 17 साल की उम्र में डायविंग कर रही थी तो एक्सीडेंट हुआ, अब 45 साल से क्वाटरप्लिजिक के रूप में जी रही हैं, ब्रेस्ट कैंसर था, दर्द का अनुभव किया, और फिर भी वो अच्छी विश्वासी और प्रभु को जानकर आभारी है, उनका जीवन फलवन्त है, उत्पादनशील जीवन है इतने दू:खों को सहने के बाद भी, वो हमारे लिए प्रेरणा हो सकती है, कि हमारे दू:खों में छुटकारे के उद्देश को देख सके, परमेश्वर की भलाई पर भरोसा कीजिए, कि इस जीवन से मदत करे, जब तक प्रभु के पास न जाए, सदा के लिए, और समझ से परे उनका परिणाम पाए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों आज आपने प्रोग्राम से कुछ पाया है तो मैं कहूँगा कि ये जान ले कि परमेश्वर आपकी परवाह करता है, और वो आपके जीवन में जुड़ा है, और ज्यादा करना चाहता है यदि आप मदत के लिए उसे पुकारते हैं, अगले हफ्ते हम महत्वपूर्ण सवाल देखेगे कि यीशु कौन था? हम कैसे कह सकते हैं जो उसने 4 सुसमाचार में कहा है, ये महत्वपूर्ण प्रोग्राम होगा मैं आशा करता हूँ कि आप जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् ब्यद्द ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्धद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋच्ङक्ष्